

पद १३

(राग: मिश्र काफी - ताल: भजनी)

योगी थोर महान् मनोहर ॥१॥ ध्रु० ॥ माणिकानुज नृसिंह तनुज तूं।
बालमुनी परिपूर्ण ज्ञानी तूं। मी कैसे वर्णू रे जेथे, थकले वेद
पुराण ॥१॥ योग ज्ञान वैराग्य मूर्ति तूं। श्रीगुरु पीठा द्वितीय गुरु
तूं। भक्त मनोरथ कल्पतरू तूं, रचिले नित्य विधान ॥२॥ खेळ
खेळता गादी बैसुनीं। सामर्थ्याचे तेज दाउनीं। श्रीप्रभु पुसतां सांगे
नमुनी, आज्ञा शिरसा मान्य ॥३॥ तत्त्वज्ञान पर काव्य गुंफुनी।
त्यांत प्रभु नामामृत भरुनी। भक्तजनाची पीडा हरुनीं, लावी प्रभु
पदीं ध्यान ॥४॥ प्रथमरूपीं मनोहर माणिक तूं। द्वितीय रूपीं
मार्तण्डाग्रज तूं। तृतीयरूपीं मातुल शंकरचा, सिद्धाचा तूं
प्राण ॥५॥